

प्राकृतिक वनस्पति, भारत के विभिन्न प्रकार के वन

भारत में प्राकृतिक वनस्पति का वर्गीकरण

भारत में प्राकृतिक वनस्पतियों का वितरण निम्नलिखित कारकों द्वारा नियंत्रित और नियमित होता है:

1. वर्षा का वितरण
2. स्थलाकृति (क्षेत्र की ऊंचाई और ढलान)

इन कारकों के आधार पर, भारत की प्राकृतिक वनस्पति को मोटे तौर पर निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

1. उष्णकटिबंधीय सदाबहार और अर्ध-सदाबहार वन
2. उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
3. उष्णकटिबंधीय शंकुधारी वन एवं झाड़ियाँ
4. पर्वतीय वन
5. मैंग्रोव वन

उष्णकटिबंधीय सदाबहार और अर्ध-सदाबहार वन

- भारत के उन भागों में पाए जाते हैं जहां 200 सेमी. और उससे अधिक वार्षिक वर्षा होती है।
- यहाँ लघु शुष्क ऋतु के साथ वर्षा लगभग पूरे वर्ष भर होती है।
- नम एवं गर्म जलवायु सभी प्रकार की घनी वनस्पतियों पेड़, झाड़ियाँ और लताओं को वृद्धि करने में मदद करती है- जिससे वनस्पतिक विकास कई स्तरीय होता है।
- पेड़ निश्चित समय अवधि तक पत्तियां नहीं गिराते हैं। इसलिए जंगल साल भर हरे-भरे दिखाई देते हैं।
- व्यावसायिक रूप से उपलब्ध कुछ पेड़ **चंदन की लकड़ी, आबनूस, महोगनी, शीशम, रबड़, सिनकोना** आदि हैं।
- इन वनों में मुख्य जानवर हाथी, बंदर लेमुर, हिरण, एक सींग वाले गैंडा आदि हैं।
- पश्चिमी तट; पश्चिमी घाट; लक्षद्वीप समूह, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह; असम के ऊपरी हिस्से; और तमिलनाडु तट इन वनों से आच्छादित हैं।
- ये विषुवतीय वर्षावनों के समान हैं।

उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन

- ये भारत के सबसे विस्तृत एवं सबसे फैले हुए जंगल हैं।
- उन्हें मानसून वने के रूप में भी जाना जाता है।
- ये भारत के उन भागों में पाए जाते हैं जहां 200 सेमी से 70 सेमी के बीच वार्षिक वर्षा होती है।



- यहाँ मौसमी प्रकृति की वर्षा होती है।
- इस प्रकार के वन में, गर्मियों की ऋतु में पेड़ लगभग छह से आठ महीनों के लिए अपनी पत्तियां गिरा देते हैं।
- यहां पाए जाने वाले जानवर हैं: शेर, बाघ, सुअर, हिरण, हाथी, विभिन्न प्रकार के पक्षी, छिपकली, सांप, कछुआ, इत्यादि।

उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती वन

- 200 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा वाले वन।
- ये पाए जाते हैं: (a) हिमालय की तलहटी के साथ भारत का पूर्वी हिस्सा- उत्तर-पूर्वी राज्य, (b) झारखंड, पश्चिम उड़ीसा और छत्तीसगढ़, (c) पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान पर।
- उदाहरण: सागौन, बांस, साल, शीशम, चंदन, खैर, कुसुम, अर्जुन, शहतूत, आदि।

उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन

- 100 से 70 सेमी. वार्षिक वर्षा वाले वन।
- उत्तर प्रदेश और बिहार के मैदानी इलाकों में (a) प्रायद्वीपीय पठार और (b) के बरसाती भागों में पाया जाता है।
- उदाहरण: सागौन, साल, पीपल, नीम आदि।

ऊष्णकटिबंधीय शंकुधारी वन

- ये 70 सेमी. से कम वर्षा वाले भागों में पाए जाते हैं।
- यहाँ वर्षा बेसमय, अनियमित और असंगत होती है।
- मरुद्भिद उष्णकटिबंधीय कांटे से आच्छादित क्षेत्रों पर ज्यादा हैं।
- ये गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश और हरियाणा के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों सहित उत्तर-पश्चिमी भाग में पाए जाते हैं।
- यहाँ की मुख्य पौधों की प्रजातियाँ **बबूल, ताड़, छोटी दुद्धी, कैक्टस, खैर, कीकर** आदि हैं।
- इस वनस्पति में पौधों के तने, पत्तियां और जड़ों जल को संरक्षित करने के अनुकूल हैं।
- तना रसीला होता है और वाष्पीकरण को कम करने के लिए पत्तियां ज्यादातर मोटी और छोटी होती हैं।
- यहाँ सामान्य जानवर चूहे, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िया, बाघ, शेर, जंगली गधा, घोड़े, ऊँट आदि हैं।

उष्णकटिबंधीय पर्वतीय वन

- ऊंचाई में वृद्धि के साथ तापमान में कमी प्राकृतिक वनस्पति में संगत परिवर्तन के लिए जिम्मेदार है।



- पहाड़ की तलहटी से लेकर शीर्ष तक एक ही पदानुक्रम पाया जाता है जैसा कि उष्णकटिबंधीय से टुंड्रा क्षेत्र तक देखा जाता है।
- ये अधिकांशतः हिमालय के दक्षिणी ढलानों दक्षिणी और पूर्वोत्तर भारत में ऊंचाई वाले स्थान में पाए जाते हैं।
- 1500 मीटर की ऊंचाई तक शीशम के साथ ऊष्ण कटिबंधीय आद्र पर्णपाती वन पाए जाते हैं।
- 1000-2000 मीटर ऊंचाई पर, आर्द्र शीतोष्ण प्रकार की जलवायु पायी जाती है, जिसमें सदाबहार चौड़ी पत्ती वाले पेड़ जैसे ओक और शाहबलूत पाए जाते हैं।
- 1500-3000 मीटर ऊंचाई पर, समशीतोष्ण वृक्ष जैसे **चीर, सनोबर, देवदार, चांदी के देवदार, स्पूस, देवदार** आदि को समशीतोष्ण वन में शामिल करते हैं।
- 3500 मीटर से अधिक ऊंचाई पर नम शीतोष्ण घास के मैदान जैसे मर्ग (कश्मीर), बुग्यालों (उत्तराखंड) आम हैं।
- जैसे-जैसे ये हिम रेखा के पास पहुंचते हैं, ये छोटे होते जाते हैं।
- अंततः झाड़ियों अल्पाइन घास के मैदानों में विलीन हो जाते हैं।
- ये घास के मैदान बड़े पैमाने पर गुर्जरों और बक्कर वालों जैसे खानाबदोश जनजातियों द्वारा चराई के लिए उपयोग किए जाते हैं।
- अधिक ऊंचाई पर, कुछ वनस्पति कार्ई और लाइकेन टुंड्रा प्रकार की वनस्पति का भाग हैं।
- इन वनों में पाए जाने वाले मुख्य जानवर कश्मीरी हिरण, चित्तीदार हिरण, जंगली भेड़, सियार, याक, हिम तेंदुआ, दुर्लभ लाल पांडा, भेड़ और मोटी फर वाली बकरियां आदि हैं।
- भारत में इनका अध्ययन दो समूहों में किया जाता है: उत्तरी पर्वतीय वन और दक्षिणी पर्वतीय वन।
- **उत्तरी पर्वतीय वन:** ये हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से जुड़े हैं। वनस्पति के प्रकार सूर्य की रोशनी, तापमान और वर्षा द्वारा नियंत्रित होते हैं जोकि ऊपर वर्णित है।
- **दक्षिणी पर्वतीय वन:** ये नीलगिरी, अन्नामलाई और इलायची की पहाड़ियों से जुड़े हैं। ये नम समशीतोष्ण वन हैं जिनमें समृद्ध स्थानिक जैव विविधता है और इन्हें शोला वन के रूप में वर्णित किया जाता है।

मैंग्रोव वन

- मैंग्रोव वन उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के डेल्टा क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
- इन्हें ज्वारीय वनों और झील के वनों के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि ये अंतर-ज्वारीय क्षेत्र से जुड़े होते हैं।
- उनकी जैव विविधता और वन घनत्व भूमध्य रेखीय वर्षावनों और उष्ण कटिबंधीय सदाबहार एवं अर्ध-सदाबहार वनों के साथ समान हैं।
- मैंग्रोव नमक अनुकूलित पौधे हैं जिनकी जड़ें न्यूमैटोफोरस (इनकी जड़ें जमीन से ऊपर की ओर निकलती हैं) अनुकूलित हो रही हैं।



- मैंग्रोव पारिस्थितिक तंत्र एक अनोखा पारिस्थितिकी तंत्र है क्योंकि आवर्ती बाढ़ और शुष्कता और साथ ही नम लवणता के अनुकूल है।
- भारत में दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव क्षेत्र पाया जाता है।
- सुंदरबन, महानदी, गोदावरी-कृष्णा और कावेरी डेल्टा इन जंगलों से सबसे महत्वपूर्ण रूप से पाए जाते हैं।
- सुंदरबन दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव है। यह सुंदरी पेड़ के लिए प्रसिद्ध है जो टिकाऊ सख्त लकड़ी प्रदान करता है।
- कुछ अन्य उदाहरण **राइज़ोफोरा, एविसेनिया** आदि हैं।
- डेल्टा के कुछ हिस्सों में ताड़, नारियल, केवड़ा, अगर आदि भी उगते हैं।
- रॉयल बंगाल टाइगर इन वनों में एक प्रसिद्ध जानवर है।
- इन जंगलों में कछुए, मगरमच्छ, घड़ियाल, सांप भी पाए जाते हैं।
- महानदी डेल्टा की भीतरकनिका मैंग्रोव अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए भी प्रसिद्ध है।

